PROSE AND DRAMA

STUDY MATERIAL

FIRST SEMESTER

COMMON COURSE IN HINDI

For

BA/BSc PROGRAMME

(2016 ADMISSION ONWARDS)

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

Calicut University P.O, Malappuram, Kerala, India 73635

$H_1$01

UNIVERSITY OF CALICUT

SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

STUDY MATERIAL
FIRST SEMESTER

B A/BSC PROGRAMME

(2016 ADMISSION ONWARDS)

COMMON COURSE IN HINDI

A 07 : PROSE AND DRAMA

Prepared by:

Dr.Sreekala.T.K
Assistant Professor on contract
School of Distance Education
University of Calicut

Layout: 'H' Section, SDE
©
Reserved

विषय सूची

	CONTENT	PAGE NO.
Module -1	Introduction: different form of prose writing, definition, principles and development – shortstories, essay, sketch, satire and memoir.	**5 -9**
Module - 2	वापसी -उषा प्रियंवदा मित्रता - रामचन्द्र शुक्ल ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से - रामधारी सिंह दिनकर	**10-17**
Module-3	मैं नरक से बोल रहा हूँ - हरिशंकर परसाई स्वामी विवेकानन्द - प्रेमचन्द	**18-22**
Module -4	बिना दीवारों के घर -मन्नु भण्डारी	**23-30**

MODULE – 1

आधुनिक हिन्दी गद्य का विकास केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं रहा। पूरे देश में और हर प्रदेश में हिन्दी की लोकप्रियता फैली और अनेक लेखकों ने हिन्दी में साहित्य रचना करके इसके विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

भारतेन्दु युग

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के संक्राति काल के दो पक्ष हैं। इस समय के दरम्यान एक और प्राचीन परिपाटी में काव्य रचना होती रही और दूसरी ओर सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों में जो सक्रियता बढ़ रही थी और परिस्थितियों के बदलाव के कारण जिन नये विचारों का प्रसार हो रहा था उनका भी धीरे-धीरे साहित्य पर प्रभाव पड़ने लगा था। प्रारंभ के 25 वर्षों (1843 से 1869) तक साहित्य पर यह प्रभाव बहुत कम पड़ा। किन्तु सन् 1868 के बाद नवजागरण के लक्षण अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे थे। विचारों में इस परिवर्तन का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को है। इस लिए इस युग को भारतेन्दु युग भी कहते हैं। भारतेन्दु के पहले ब्रज भाषा में भक्ति और श्रंगार परक रचनाएँ होती थीं और लक्षण ग्रंथ भी लिखे जाते थे। भारतेन्दु के समय से काव्य के विषय चयन में व्यापकता और विविधता आई। श्रृंगारिकता, रीतिबद्धता में कमी आई। राष्ट्रप्रेम, भाषा-प्रेम और स्वदेशी वस्तुओं के प्रति प्रेम कवियों के मन में बी पैदा होने लगा। उनका ध्यान सामाजिक समस्याओं और उनके समाधान की ओर भी गया। इस प्रकार उन्होंने सामाजिक राजनीतिक क्षेत्रों में गतिशील नवजागरण को अपनी रचनाओं के द्वारा प्रोत्साहित किया।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र , बाबा सुमेर सिंह, बदरी नारायण प्रेमघन , प्रताप नारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास , अंबिका दत्त व्यास और ठाकुर जगमोहन सिंह इस युग के प्रमुख कवि हैं। अन्य कवियों में रामकृष्ण वर्मा, श्री निवासदास, लाला सीताराम, राय देवी प्रसाद, बालमुकुंद गुप्त, नवनीत चौबे आदि हैं।

द्विवेदी युग

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के नाम पर ही इस युग का नाम 'द्विवेदी युग' रखा गया। सन् 1903 ईस्वी में द्विवेदी जी ने सरस्वती पत्रिका के संपादन का भार संभाला। उन्होंने खड़ी बोली गद्य के

स्वरूप को स्थिर किया और पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों के एक बड़े समुदाय को खड़ी बोली में लिखने को प्रेरित किया। इस काल में निबंध, उपन्यास, कहानी, नाटक एवं समालोचना का अच्छा विकास हुआ।

इस युग के निबंधकारों में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी, माधव प्रसाद मिश्र, श्याम सुंदर दास, चंद्रधर शर्म गुलेरी, बाल मुकंद गुप्त और अध्यापक पूर्ण सिंह आदि उल्लेखनीय हैं।

निबन्ध

हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में भारतेन्दु और उनके सहयोगियों से निबंध लिखने की परम्परा का आरंभ होता है। निबंध ही नहीं, गद्य की कई विधाओं का प्रचलन भारतेन्दु से होता है। यह इस बात का भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, सरदार पूर्ण सिंह प्रमुख हिंदी निबंधकार हैं। निबन्ध के तीन प्रकार है। भावात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक। भावात्मक- भावात्मक निबंध में भाव की प्रधानता होती है। और विचारात्मक निबंध में विचार की, यहाँ प्रधानता शब्द ध्यान देने योग्य है। कोई भी निबंधकार केवल भाव या विचार के सहारे नहीं चलता, वह अपने साथ बाव और विचार दोनों को लेकर चलता है। पर उसमें कवि भाव पक्ष की प्रधानता रहती है। और कवि विचार पक्ष में भाव पक्ष की प्रधानता रहने पर भावात्मक निबंध की रचना होती है। और विचार पक्ष की प्रधानता रहने पर विचारात्मक निबंध की, कहने का तात्पर्य यह है की ना तो भावात्मक निबंध में बुद्धि की सर्वथा उपेक्षा रहती है। और ना विचारात्मक निबंध में हृदय की, विचारात्मक निबंधों में निबंधकार ऐतिहासिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। पर ऐतिहासिक या वैज्ञानिक की तरह वह विषय से शतर्क नहीं रहता बल्कि विषय के साथ अपने आप को एकाकार कर देता है। विचारात्मक निबंध में का आधार चिंतन है निबंधकार अपने चिंतन के माध्यम से अपनी बात पाठकों तक पहुंचाता है। अपने बुद्धि से पाठकों की बुद्धि को आत्मीयता स्थापित करना इसका उद्देश्य रहता है।

रेखाचित्र

पाश्चात्य साहित्य विशेषकर अंग्रेज़ी साहित्य के स्केचों से प्रभावित रेखाचित्र वस्तुतः कहानी और निबंध के मध्य झूलती विधा है। हिंदी में निबंध तथा कहानी पर लिखी गयी आलोचना पुस्तकों में

रेखाचित्र को कहानी या निबंध-कला की सहायक शैली मान लिया गया है अथवा कहानी और निबंध की रचना-सीमाओं को फैलाकर रेखाचित्र को उन्हीं के अंतर्गत समाविष्ट करने का प्रयास किया गया है। रेखाचित्र में कहानी से अधिक मार्मिकता, निबंध से अधिक मौलिकता एवं रोचकता होती है। इसमें कहानी का कौतूहल है तो निबंध की गहराई भी है। वस्तुतः रेखाचित्र विभिन्न विधाओं की विशेषताओं का विचित्र समुच्चय है।

संस्मरण

संस्मरण और रेखाचित्र दोनों एक दूसरे के इतना निकट है कि कभी-कभी तो दोनों को अलग करना कठिन हो जाता है। संस्मरण संवेदनशील स्मृतियों का प्रत्यक्षीकरण है जिसके सूत्र किसी साधारण अथवा विशिष्ट व्यक्ति से जुड़े होते हैं। किन्तु इतना साम्य होने पर भी ये दोनों दो भिन्न विधाएँ हैं। रेखाचित्र अपेक्षित, अपरिचित साधारण व्यक्ति के असाधारण व्यक्तित्व पर आधारित होते हैं, जबकि संस्मरण बहुधा परिचित, असाधारण व्यक्तित्व पर आधारित होते हैं। रेखाचित्र में वर्णनात्मक चित्रण की प्रधानता रहती है जबकि संस्मरण में विवरणों की प्रधानता रहती है। संस्मरण में कथाओं और प्रसंगों का उपयोग किया जाता है जबकि रेखाचित्र में रूप की अभिव्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित होता है। संस्मरण में देशकाल और परिस्थितियों की प्रधानता होती है जबकि रेखाचित्र में वर्ण्य-विषय या वस्तु की। संस्मरण प्रायः बीती बातों या दिवंगत व्यक्तियों से सम्बंधित होते हैं जबकि रेखाचित्र में समकालीन घटनाओं या दृश्यों का वर्णन भी हो सकता है।

जीवनी

किसी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन वृतान्त को जीवनी कहते है। विशिष्ट व्यक्तित्व के सबी लोग नहीं होते है, समाज और देश के कुछ चुने हुऐ लोग ही विशिष्ट होते है। उनकी यह विशिष्टता उनके विशेष कार्यों पर निर्भर करती है। ऐसे ही विशिष्ट पुरुषों की जीवनी लिखी जाती है। स्वरूप हिन्दी में जीवनी को जीवन चरित्र और जीवन चरित्र भी कहते है। वैसे ही दोनों में कोई काश अत्तर नहीं है, फिर भी विशिष्ट अर्थ में दोनों में अंतर किया जाता है। जीवनी में जीवन की अस्तूर घटनाओं का और जीवन चरित्र में नायक के आन्तरिक गुणों का समावेश किया जाता है। सच तो यह ही की जीवनी में किसी चरित्र में नायक के आन्तरिक गुणों का समावेश किया जाता है। सच तो यह है कि जीवनी में किसी

चरित्र नायक के अंतर और बाह्य बहरी दोनों प्रकार की जीवन गद्य घटनाओं और गुणों का लेख-जोख्रा प्रस्तुत किया जाता है। जीवनी में नायक के संम्पूर्ण जीवन के विशिष्ट क्रियाकलापों की विशेषता रहती है। जीवनी ना तो इतिहास है, ना ही कल्पनिक कथा यह किसी भी पुरुष की आदर्श कार्जों को प्रस्तुत करती है। यह उपन्यास भी नहीं है, जीवनी लिख्रने का मुख्य उद्देश्य होता है। की विशिष्ट मनुष्यों को व्यक्ति के रूप में देख्रा और परख्रा जाए। क्योंकि हर व्यक्ति में कुछ न कुछ अपनी विशेषता रहती है। इसी विशेषता को प्रकट करना ही जीवनी का मुख्य लक्ष्य है। प्रकार-वैसे जीवनी के अनेक भेद किये गये है, जैसे-आत्मनीय जीवनी, लोकप्रिय जीवनी, ऐतिहासिक जीवनी, मनोवैज्ञानिक जीवनी, व्यक्तिगत जीवनी, कलात्मक जीवनी, व्यंजनात्मक जीवनी इत्यादि।

कहानी

साहित्य की सभी विधाओं में कहानी सबसे पुरानी विधा है, जनजीवन में यह सबसे अधिक लोकप्रिय है। प्राचीन कालों में कहानियों को कथा, आख्यायिका, गल्प आदि कहा जाता है। आधुनिक काल में कहानी ही अधिक प्रचलित है। साहित्य में यह अब अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान बना चुकी है। पहले कहानी का उद्देश्य उपदेश देना और मनोरंजन करना माना जाता है। आज इसका लक्ष्य मानव-जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना है। यही कारण है कि प्राचीन कथा से आधुनिक हिन्दी कहानी बिल्कुल भिन्न हो गई उसकी आत्मा बदली है और शैली भी। कहानी के तत्व-मुख्यतः कहानी के छ तत्व माने गये है। (1) कथावस्तु (2) चरित्र-चित्रण (3) संवाद (4) देशकाल या वातावरण (5) उद्देश्य (6) शैली

नाटक

भारत में नाटक साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसके लम्बी परम्परा पाई जाती है। भारत में ही नाट्यशस्त्र की रचना सबसे पहले हुई थी। यहाँ नाट्यशस्त्र की अनेक आचार्य हुऐ, जिन्होंने नाटक पर बड़े विस्तार और गम्भीरतका से इस विधा पर विचार किया है। इन में भरत, धनंजय, रामचन्द्र, गुणचन्द्र, अभिनव गुप्त, विश्वनाथ आदि के नाम अधिक प्रसिद्ध है। नाटक की परिभाषा-आचार्य धनंजय ने नाटक की परिभाषा इस प्रकार बताई है- अवस्था की अनुकृति नाटक है, यह परिभाषा सतर्क है, व्यावहारिक और उपयोगी है। नाटक अनुकरण तत्व की प्रधानता है, साहित्य की सभी

विधाओं में नाटक की वह विधा है, जिसमें अनुकरण पर सार्वधिक बल दिया गया है। लेकिन यहाँ सवाल उठता है। अनुकरण किसा हो, इसका उत्तर है, कार्ज तथा मानवीए जीवन के क्रियाशील कार्जो का मनुष्य अनेक परिस्थितियों से हर क्षण गुजरता है। उनकी भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ होती है। भिन्न भिन्न अवस्थाओं में रहने के कारण उनके जीवन रंगमंच पर अनेक दृश्य अनेक स्थितियों आते जाते रहते हैं। नाटककार नाटक की रचना करते समय इन्हीं स्थितियों का अनुकरण करता है। नाटक के तत्व- भारतीयों दृष्टि से नाटक के तीन तत्व माने गये है, वस्तु, नेता (कलाकार) और रस।

उपन्यास

उपन्यास का मूल अर्थ है, निकट रखी गई वस्तु किंतु आधुनिक युग में इसका प्रयोग साहित्य के एक विशेष रुप के लिए होता है। जिसमें एक दिर्ग कथा का वर्णन गद्द में क्या जाता है। एक लेखक महोदय का विचार है, कि जीवन को बहुत निकट से प्रस्तुत कर दिया जाता है। अतः इसका यह नाम सर्वथा उचित है, किंतु वे भूल गए हैं। साहित्य के कुछ अन्य अंगों जैसे- कहानी, नाटक, एकांकी आदि में भी जीवन को उपन्यास के बाति बहुत समीप उपस्थित कर दिया जाता है। प्राचीन काव्य शास्त्र में इस शब्द का प्रयोग नाटक की प्रति मुख्य संधि के एक उपभेद के रुप में किया गया है। जिसका अर्थ होता है किसी अर्थ को युक्तिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने वाला तथा प्रसन्ता प्रदान करने वाला साहित्य के अन्य अंगों में भी लागू होती है। आधुनिक युग में उपन्यास शब्द अंग्रेजी के Novel अर्थ में प्रयुक्त होता है। जिसका अर्थ है, एक दीर्घ कथात्मक गद्द रचना है। वह वृथक आकर का वृतांत जिसके अंतर्गत वास्तविक जीवन के प्रतिनिधित्व का दावा करने वाले पात्रों और कार्यों का चित्रण किया जाता हैं। उपन्यास के तत्व-पश्चात विद्वानों ने उपन्यास के मुख्यता छ तत्व निर्धारित किए गए हैं। कथावस्तु पात्र या चरित्र-चित्रण कथोपकथन, देशकाल, शैली, उपदेश।

MODULE - 2

उषा प्रियंवदा।

नई कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर है उषा प्रियंवदा। आधुनिक भवबोध से युक्त अपने युग की प्रामाणिक अभिव्यक्ति करने वाली गंभीर एवं अर्थपूर्ण कहानियाँ लिखकर लेखिका ने पाठकों का दिल जीत लिया है । व्यक्ति और परिवार और समाज के अन्तर संबन्धों की विसंगतियों और विडंबनाओं को जितनी सूक्ष्मता उन्होंने अपनी कहानियों ने चित्रित किया है उतनी ही व्यापकता में वे व्यक्ति को बाह्य और अंतरिक संसार के बीच के संबन्ध को भी उकेरा है।

इनकी प्रसिद्ध रचनायें हैं- 'पचपन खम्भे लाल दीवारें', 'रुकेगी नहीं राधीका', 'शेषयात्रा,' 'वनवास', 'ज़िन्दगी और गुलाब के फूल'आदि। वापसी कहानी पर इन्हें नई कहानियाँ का 1960 ई. की सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार मिला था। हिन्दी की अधिकांश स्वातन्त्र्योत्तर काल की कहानियाँ नगरबोध से संबन्धित हैं। आधुनिकता ने जीवन मूल्यों का विघटन कर दिया हैं,आपसी संबन्ध बिखर गये हैं। वापसी कहानी में इसी तनावग्रस्त जीवन यर्थाथता चित्रित किया है।

वापसी

जिन्दगी और गुलाब कहानी संग्रह के कहानी 'वापसी' जो बहुर्चित रही जिसे नामवर सिंह ने खास तौर पर रेखांकित किया था। कहानी में संयुक्त परिवार की टूटती हई परंपरा का संकेत मिलता है। इस कहानी में रिटायर्ड गजाधर बाबू का अकेलापन और बदलते जीवन मूल्यों को प्रस्तुत की है।

कहानी के मुख्य पात्र है गजाधर बाबू जो पैंतीस साल की स्टेशन मास्टर की नौकरी से अवकाश प्राप्त करने के बाद बडे उत्साह से अपने परिवार के साथ खुशी से रहने के इच्छा से घर लौटता है। लेकिन अपने ही घर में अपने को अनफिट सा मेहसूस करता है। जितने अरमानों के साथ गजाधर बाबू अपनी रिटायर जीवन के सपने सजाये थे कुछ ही दिनों में वह सब चकना चूर हो जाता है। उन्हें मेहसूस होने लगता है कि परिवार कोलिए वह बाहरी आदमी ही नहीं फालतु भी है।

अपने परिवार को खुश रखने केलिए वे अपने पूरे जिन्दगी बितायी। लेकिन परिवार के किसी सदस्य को उनके प्रति लगाव नहीं है, उनकेलिए जगाधर बापू केवल पैसा कमाने के साधन मात्र रह गए है। बार-बार आहत होते हुए अपने मन ही मन गजाधर को अपना बीते हुई कल की सुन्दर यादें

याद आती है। वे अपने बच्चों की मनोविनोद में शामिल होना चाहते थे पर असफल हो गया। सबसे दु:खद यह था कि जिस पत्नी का प्यार और श्रद्धा की कामना उसके पूरे जीवन में जीने का सहारा था वह भी उनकी न रहकर अपने शेष परिवार की हो चुकी थी। क्योंकि वह घर की खर्चा में व्यस्त थी, सदा बहू को कसूरवार ठहराती थी यानी घर ग्रहस्ती के मामलों में उलझी हुई थी । गजाधार बाबू के प्रति किसी के भी मन में सहानूभूति नहीं थे। पडोसी के घर पर जाने से रोकने के कारण बेटी बाप से बातें करना छोड देती है। पूरे घर में गजाधर बाब अनावश्यक चीज़ मात्र बन जाता है। अन्त में वह रामजी लाल के चीनी निल में नौकरी करने पर मज़बूर हो जाता है। वापसी कहनी निम्न मध्यवर्गीय शहरी परिवार की यथार्थवादी कहानी है ।

प्रश्न और उत्तर

1. सेवामुक्त होकर आनेवाले गजाधर बाबू की क्या कामनायें थी ?

उ. गजाधर बाबू पैतीस साल की नौकरी के बाद यह सोचकर घर लौटा था कि आगे खुशी से दिन गुज़ारेंगे। जब वह परिवार के साथ रहता था तब काम से लौट आते ही बच्चों के साथ खूब समय बीताता था। पत्नी उसे गरम-गरम रोटियों खिलाती थी। नौकरी और आर्थिक परिस्थिती के कारण उन्हें अपने परिवार से अलग रहना पडा। अब जब घर लौटा है तो अपने परिवार के साथ उसी प्यार भरी माहोल में रहने के इच्छा था।

2. बसन्ती गजाधर बाबू से क्यों रूठती है?

उ. गजाधर बाबू की बेटी है बसन्ती। गजाधर बाबू के आने से पहले घर के सभी अपने-अपने मसती में रहते थे। कोई रोक-टोक नहीं था। गजाधार बाबू जब अपनी जवान बेटी बसन्ती को पडोसीन के घर जाने से मना करता है तो वह रूठती है।

3. वापसी शीर्षक पर विचार प्रकर कीजिए?

उ. इस कहानी में एक नहीं दो वापसी हैं। गजाधर बाबू जो पैंतीस साल की स्टेशन मास्टर की नौकरी से अवकाश प्राप्त करने के बाद बडे उत्साह से अपने परिवार के साथ खुशी से रहने के इच्छा से घर वापस आता है। लेकिन पूरे घर में गजाधर बाब अनावश्यक चीज़ मात्र बन जाता है। अन्त में उन्हें रामजी लाल के चीनी मिल में नौकरी केलिए घर से वापस जाना पडा।

4. गजाधर बाबू के प्रति घर वालों का कैसा व्यवहार था?

उ. घर छोटा था और गजाधर बाबू के रहने केलिए कोई जगह न था। जैसे मेहमानों केलिए कुछ अस्थायी प्रबन्ध कर दिया जाता है उसी प्रकार बैठक से कुरसियों हठाकर गजाधर बाबू केलिए पतली सी चारपाई डाल दी गयी। बेटे और बहु उनसे बातें तक नहीं करते थे। पत्नी सारा वक्त घर की खर्चा के बारे में कहती रहती है और बहु की शिकायतें भी। पडोसी के घर जाने से रोकने के कारण बेटी बसन्ती बाप से बाते करना छोड दिया। घर के कोई भी सदस्य उसके साथ बैठकर न खाना खाते है और न हीं उनके परवाह करते हैं। घरवालों केलिए गजाधर बाबू हर काम में बाधा डालने वाले व्यक्ति मात्र बन गया।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए:-

"सभी खर्च तो वाजिब हैं, किसका पेट काटूँ? यही जोड-गाँठ करते-करते बूढ़ी हो गई, न मन का पहना,न ओढा" ।

नई कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर है उषा प्रियंवदा उनकी वापसी नामक कहानी में रिडर्यट गजाधर बाबू की अकेलेपन और घरवालों द्वारा तिरस्कृत होनी की कथा है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ वापसी कहानी से लीगयी है । सेवानिवत्त हो कर घर आये गजाधर बाबू के प्रति घर वालों का बुरा व्यवहार था। गजाधर बाबू परिवार के साथ खुशी से रहना चाहता था। परिवार की अर्थिक स्थिति दिन ब दिन बढ़ती जा रही थी। पत्नी हर दिन मेहगायी और घर के खर्च की बातें करती रहती थी । वह घर की खर्च में व्यस्त थी । पति के प्रति कोई दायित्व नहीं निभाती है।। पूरे घर में गजाधर बाब अनावश्यक चीज़ मात्र बन जाता है। अन्त में वह रामजी लाल के चीनी निल में नौकरी करने पर मज़बूर हो जाता है। वापसी कहनी निम्न मध्यवर्गीय शहरी परिवार की यथार्थवादी कहानी है ।

रामचन्द्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी साहित्य के उच्च कोटि के निबन्धकर और आलोचन के रूप में माने जाते है। इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म 1884 में अगोना ग्राम में हुआ। शुक्ल जी का साहित्यिक व्यक्तित्व विविध पक्षों वाला है। उनके निबन्धों का संकलन है चिन्तामणि जो तीन भागों में विभक्त है।

शुक्लजी ने हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा जिसमें काव्य प्रवृत्तियों एवं कवियों का परिचय भी है। उनके मुख्य रचनायें है- 'हिन्दी साहित्य का इतिहास', 'चिन्तामणि', 'हिन्दी शब्द सागर', 'ग्यारह वर्ष का समय' (कहानी), 'तुलसीदास', 'रसमीमांसा' आदि। उन्होंने संस्कृत, अंग्रेज़ी ,बेगला और हिन्दी के प्राचीन साहित्यपर गंभीर अध्ययन किया है।

चिन्तामणि तीन भाग में प्रकारित हुए है जो मनोवाज्ञानिक एवं समालोचनात्मक है।

मित्रता:-

मानव सम्माजिक प्राणी है। बचपन में माता की गोद पहले उसका साथ देती है और धीरे - धीरे परिवार के सदस्य उसके साथ होते है। किशोर अवस्था में जब वह घर से बाहर निकलने लगता है तो उसे मित्र ही प्रिय लगते है। मित्रता का अर्थ है दो या अधिक व्यक्तियों के बीच का वह पावन संबन्ध जो स्वार्थ भावना से पार होता है और जो सदैव एक दूसरे के हित केलिए तत्पर रहते है। मित्र केवल हमारे गुण-दोषों की ही परख करने वाले व्यक्ति नही होते है, अपितु वह जीवन में उत्साह और नई चोतना प्रदान करने वाले है । निष्कपट व्यक्ति होता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है। जब कोई व्यक्ति समाज में प्रवेश करते है तब उसका दिल कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। कच्ची मिट्टी के मूर्त्ति के समान रहते है जिसे जो जिस रुप का चाहे वह रुप बनाता है। इसलिए दोस्तों की चयन बडी सावधानी से करना चाहिए ताकि वह हमें देवता ही बना पाये राक्षस नहीं। आदर्श मित्र अपने को पाप से दूर करता है, उसके गुणों को प्रकट करता है, कल्याणकारी कार्यों में अपने मित्र को लगाता है, आपत्ति में साथ देता है। मैत्री स्थापित करने में कभी भी शीघ्रता नहीं करनी चाहिए।

जीवन के उत्थान पतन, निमार्ग-संहार में मित्रं जितना सहायक होता है, उतना दूसरा कोई नहीं होता अतः मित्र बनाते समय बडी सचकता बरकनी चाहिए। मित्र बनाने से पूर्व उसके आचारण पर अवश्य दृष्टि डाल लेनी चाहिए जिससे बाद में पछताना न पडे।

हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हम से अधिक आत्मबल हो। संसार के अनेक महान पुरुष मित्रों के सहारे बडे-बडे कार्य करने में समर्थ हुए है। मित्रों को एक दूसरे के जीवन के कर्तव्यों को उन्नत करके उन्हें साहस, बुद्धि और एकता द्वारा चमकाना चाहिए।

कुसंग व्यक्ति ही अवनति का कारण है। वह केवल नीति और सद्‌बुद्धि का नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का क्षय करता है। जब एक व्यक्ति कीचड में एक बार पैर डाल देता है तब फिर यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसे जगह पैर रखा है। धीरे धीरे उन बुरी बातों से अभ्यस्त हो जाते है। जीवन में मित्रता की बहुत ही उपयोगिता है जिसके अभाव में जीवन नीरस और दु:खमय बनता है। मित्रता मनुष्य के हृदय को जोडती है। विवेक के साथ सद्‌गुणों को पोषित करने योग्य आचरण हमें अपनाना चाहिए।

प्रश्न और उत्तर

1. मित्रता का रचनाकार कौन है?

   उ. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

2. शुक्लजी ने क्यों युवा लोगों को कच्ची मिट्‌टी की मूर्त्ति से तुलना करते है?

   उ. जब मनुष्य घर से बाहर समाज से संपर्क में आते है तब उसका मन कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। तो जिसके पास वह पहूँचता है यह चिन्तनीय है। क्योंकि मन कच्ची मिट्‌टी की मूर्त्ति के समान जो चाहे जैसा चाहे रुप बना सकता है।

3. शुक्लजी के अनुसार भले मानुस के लक्षण क्या है?

उ. शुक्लजी के अनुसार भले मानुस वह है जो बडों के प्रति सम्मान और सरलता का व्यवहार, बराबर वालों से प्रसन्नता का व्यवहार और छोटों के प्रति कोमलता का व्यवहार करें।

4. कुसंग का क्या असर पड़ता है?

   उ. कुसंग भयानक होता है। वह केवल नीति और सद्‌बुद्धि का नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का क्षय करता है। यदि किसी पुरुष की संगत बुरी होगी तो वह पैरों पर बेंधी चक्की सम्मान होती है जो दिन-ब -दिन अवनति के गढों में गिराती जायेगी।

5. सच्चे मित्र का कर्तव्य क्या है?

   उ. उच्च और महाकार्यो में सहायता देना, मन बढ़ाना और साहस दिलना, और दृढ़चित और सत्यसंकलप से वह अपने साथियों का अत्मबल बडा सकता है।

6. “विश्वासपात्र मित्र से बडी भारी रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाय उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।” क्यों?

   उ. विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ कराते हैं, दोषों त्रुटियों से हमें बचाते हैं , हमारे सत्य पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पृष्ट कराते हैं और अगर हम कोई कुमार्ग पर पैर रखेंगे तो वे हमें सचेत करते हैं।

रामधारी सिंह दिनकरः-

हिन्दी के प्रमुख लेखक, कवि व निबंधकार रामधारी सिंह दिनकर के जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार प्रान्त के मुंगेर जिल में हुआ था। वे स्वतंत्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रकवि के नाम से माने जाने लगा। उनकी पुस्तक ‘संस्कृति के चार अध्याय’ केलिए साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा ‘उर्वशी’ केलिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। नामवर सिंह ने कहा कि दिनकरजी अपने युग के सचमुच सूर्य थे। ‘रश्मिरथी’, ‘उर्वशी’, ‘रेणुका’, ‘मिट्टी की ओर’, ‘काव्य की भूमिका’ आदि उनके कुछ प्रमुख रचनायें हैं। सरल भाषा और प्रांजल शैली में उन्होंने विभिन्न साहित्य विषयों पर निबन्ध के अलावा बालकथा, डायरी, संस्मरण तथा दर्शन व इतिहासगत तथ्यों के विवेचन भी लिखे।

ईर्ष्याः तू न गयी मेरे मन सेः-

ईर्ष्या एक ऐसा शब्द है जो मानव के खुद के जीवन को तो तहस नहस करता है औरों के जीवन में भी खलबली मचाता है। आज के समाज के लोग किसी के दुःख में दुःखी होते है, सहानुभूति जताते है किन्तु उससे कई गुना ज्यादा किसी की उन्नती से जलते है, और पूरे प्रयास करते है कि सामनेवाले का बुरा हो।

समाज में प्रतिष्ठित वकील जो अपने पास सब कुछ होने के बावजूद खुश नहीं है। धन-दौलत और संतुष्ट परिवार, उन्हें खुशी नहीं देता पडोसी जो बीमा-एजेण्ड है, उसके प्रति जलन है। साथ ही उसका सबकुछ हासिलकरने का कामना रखता है। जो अपने पास है उससे संतुष्ट न होना यही ईर्ष्या का मूल कारण है। लोग ऐसे सोच-सोचकर अपनी उन्नति केलिए कुछ न करके दूसरे को हानी पहूँचाना जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं। ईर्ष्या की बटी बेटी है निन्दा।

ईर्ष्या का काम जलना है, जिस हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है वह उन चीज़ों से आनन्द नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद है, बल्कि उस वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों का हाथ में है। चिन्ता को लोग चिता कहते है पर ईर्ष्या तो चिन्ता से भी बदतर चीज़ है क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है।

ईग्लैंड के तत्वज्ञानी बरंट्रड रसल का कहना है कि नेपोलियन सीज़र से ईर्ष्या करता था, सीज़र सिकंदर से और सिकंदर तो हरकूलस से जो बस एक काल्पनिक व्यक्ति था। ईर्ष्या किसी पर भी हावी हो सकती है, चाहे वह कितना ही सफल क्यों न हो। ईर्ष्या मन की एक पूरी तरह नकारात्मक भावना है। अनियंत्रित ईर्ष्यालु प्रति दिन व्यक्ति की प्रतिभा और कौशल का सर्वनाश करती है। मानसिक नियमन ही ईर्ष्या से बचने का उपाय है।

प्रश्न और उत्तर

1. दिनकर के विचार में ईर्ष्या की बडी बेटी का क्या नाम है?

   उ. निंदा।

2. दिनकर के किस रचना को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिल था?

   उ. उर्वशी।

3. राष्ट्रकवि नाम से जानेवाला हिन्दी के प्रमुख कवि कौन है?

   उ. रामधारी सिंह दिनकर।

4. वकील क्यों उदास है?

   उ. वकील के पास सबकुछ होने के बावजूत वह अपने पडोसी बीमा एजेण्ट के उन्नति पर ईर्ष्यालू है। जो कुछ अपने पास है उसके प्रति खुश नहीं बल्कि जो दूसरों के पास है उस पर उदासीन है

5. ईर्ष्या से बचने का क्या उपाय है?

6. **उ.** ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक नियमन है। जिस अभाव के कारण मन में ईर्ष्या पैदा होती है उसे सकारात्मक दृष्टि से देखने का प्रयास करें। यानी ईर्ष्या या जलन का कारण तलाशकर उसे सुधारना चाहिए।

7. चिन्ता को लोग क्यों चिता कहती है?

उ. चिन्ता से घिरा व्यक्ति का जिन्दगी खराब हो जाती है। चिता व्यक्ति को एक बार जलाती है तो चिन्ता मनुष्य को हर क्षण जलाकर राख्र करने की कोशिश में है।

8. ईर्ष्या क्या है? उससे बचने उपाय क्या है? पठित निबंन्ध के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

उ. ईर्ष्या एक नैतिक दुर्गुण है। ईर्ष्या का अर्थ है कि दूसरे व्यक्ति की ख़ुशी से दुःखी होना, दूसरे की उपलब्धि से दुःखी होना। ईर्ष्या एक ऐसा शब्द है जो मानव के खुद के जीवन को तो तहस नहस करता है औरों के जीवन में भी खलबली मचाता है। आज के समाज के लोग किसी के दुःख में दुःखी तो होते है, सहानुभूति भी जताते है किन्तु उससे कई गुना ज्यादा किसी की उन्नती से जलते हैं, और पूरे प्रयास करते हैं कि सामनेवाले का बुरा हो।

ईर्ष्या में मुख्य रुप से एक अपूर्णता का भाव छिपा होता है। ईर्ष्या भावनात्मक रूप से या मानसिक रुप से अलग ढ़ग से शरीरक और मानसिक स्तर पर प्रभावित करती है। ईर्ष्या मन की पूरी नकारात्मक भावना है। ईर्ष्या का काम जलना है, जिस हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है वह उन चीज़ों से आनन्द नहीं उठाता जो उसके पास मौजूद है, बल्कि उस वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरों का हाथ में है। चिन्ता को लोग चिता कहते है पर ईर्ष्या तो चिन्ता से भी बदतर चीज़ है क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है।

सबसे पहले वह जिस हृदय में जन्म लेता है उसे जलता है। कहता है चिन्ता चिता है। इससे भी बदतर है ईर्ष्या। खुशी और आनन्द में बाधा डालती है। ईर्ष्या में प्रतियोगिता सबल है। ईर्ष्या का बडी बेटी का नाम निन्दा है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालू होता है वह व्यक्ति बुरे किस्म का निन्दक भी होता है।

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक नियमन है। आत्मत्याग पूर्ण दूसरों की ख़ुशी में भी अगर हमें ख़ुशी प्राप्ति हुई तो ही ईर्ष्या से बच पायेगें।

MODULE -3

हरिशंकर परसाईः-

हरिशंकर परसाई आधुनिक हिन्दी व्यंग्य साहित्य के सर्वाधिक सशक्त व्यंग्यकार है। उनका जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के जमामी गाँव में 24 अगस्त 1904 को हुआ। परसाई का व्यंग्य पाठक के हृदय को चुभता हुआ, तीर की भाँति हृदय को आर-पार करती है। आमतौर पर तो उनकी रचनाएँ ऊपर से चाहे हास्यपद लगे किन्तु उन्में निहित व्यंग्य सच्चे पाठक को मुग्ध कर देता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र की विसंगतियों तथा विद्रूपता से साक्षात्कार करना उनकी रचनाओं का उद्देश्य है। इनके साहित्य में व्यंग्य आधुनिक भारत की त्रासदियों के दास्तान ही नहीं बल्कि वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और शिक्षा जगत् के दस्तावेज भी है। 'शिकायत मुझे भी है', 'बेइमानी का परत', 'सुनो भाई साधो', 'तुलसीदास चन्दन घिसे' आदि उनके लोकप्रिय गद्य संकलन हैं।

'मैं नरक से बोल रहा हूँ' परसाई की प्रसिद्ध व्यंग्य रचना है। इसमें लेखक ने मनुष्य की अकर्मण्यता और खोखले आदर्शो पर खूब व्यंग्य किया है। साथ ही भीख के माध्यम से व्यवस्था पर करारा तमाचा जड़ा है। लेखक ने इसमें अपनी चाबुकी शैली में वर्तमान भारत की मंत्रियों के झूठे वक्तव्यों पर व्यंग्य करते हुए गरीबों के त्रासदीपूर्ण जीवन का दर्दनाक चित्रण व्यक्त किया है।

मैं नरक से बोल रहा हूँ।

इस व्यंग्य कहानी के सबसे महत्वपूर्ण पात्र है 'मैं'। वह कायर, लोभी, अवसरवादी और झूठा है। परसाई जी ने इसमें अपनी सरल, तेज धारदार भाषा के ज़रिए छोटी से छोटी घटना को प्रभाव रूप से व्यक्त किया।

मरने के बाद 'मैं' नरक में पहूँचा। जीवन भर उससे घृणा करने वाले उसकी चिन्ता पर आग लगाने में चूकता नहीं है। एक बूँद पानी तक देने से इनकार करनेवाले लोग मृत्यु के बाद उसकी राख गंगाजल में बहा देते हैं। असल में उसका मौत भूख के कारण हुआ था। जीवन भर उसे तिरस्कार का अनुभव हुआ। अब जब मौत हुई तो नरक में पहूँचा और उसका कुत्ता स्वर्ग में। नरक और स्वर्ग बस

एक दीवार की दूरी पर थी। कुत्ते को स्वर्ग में देखकर वह खुश तो था पर अपने को नरक में रहना नहीं चाहता।

भगवान उससे कहता है कि वह आत्महत्या ही की है। इसलिए स्वर्ग नहीं मिलेगा। मंत्री ने भी बताया था कि पोस्टमोर्टम भी यही कह था।वह अपनी पूरी कथा भगवान को सुनाता है।

उसका घर शहर के एक अट्टालिका के दीवार के पास था पडोसी के बेटे की शादी का माहोल था। वहाँ से तरह-तरह की पखवान का खुशबू आ रही थी। उसी दिन उसका मृत्यु भूख के कारण हुआ और उसका कुत्ता दीवार पार करके पडोसी के यहाँ से पेट भर खाया था वहाँ के

नौकरों ने उसकी पीढाई की और कृत्ता भी मरा। बस फर्क इतना था कि कृत्ता भर पेड खाकर मरा और वह भूखा।

शहर के सभी लोग बारात में शामिल था इसलिए उसकी शवयात्रा में चार-पाँच लोग ही थे। लकडी के अभाव में उसका शरीर आधा ही जल राख हो गया। सब कुछ सुनने के बाद भगवान यह निर्णय सुनाया कि वह नरक में ही रहेगा। क्योंकि कुत्ता भी दीवार तोडकर खाना खा लिया था। उसने तो पाप-पुण्य के झमेले में पड़कर कायर हो गया। कृत्ता ने समझारी दिखाई मनुष्य होकर भी उसमें मनुष्यत्व नहीं है। उसके जैसे अकर्मण्य कायर भीरू और मूर्ख को नरक ही मिलेगा।

प्रश्न और उत्तर

1. मैं नरक से बोल रह हूँ? में कृत्ता किसका प्रतीक है?

उ. अपनी क्षमता का प्रयोग करनेवालों का ।

2. कुत्ता कैसे मारा गया था?

उ. भूख के कारण कुत्ता दीवार को लाघकर पडोसी के शादी पर बनाये गये भोजन खाया। मालीक ने उसे खीचकर एक डण्डा मारा वह कराहता हुआ मर गया।

3. भगवान क्यों क्रोधित हुआ?

उ. भूख के कारण कृत्ता दीवार को लाधकर पकवान खाया और मार खाकर मर गाय । और स्वर्ग में पहूँचा। पाप पुण्य की झमेले में पड़कर मैं वहीं ठीका रहा और भूख के मारे मर जाने के बाद नरक पहूँचा। मनुष्य होकर भी उसे स्वर्ग नहीं मिल और अपने कुत्ते को स्वर्ग में

देखकर वह भगवान से सवाल उठाता है। इससे भगवान क्रोध होकर कहता है कि तुम्हें तो पशुत्व भी नहीं है। बुद्धि और कार्य शक्ति होने पर भी कर्मण्य और कायर बना रहा।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए:-

1. ***"अरे तुम जीवन का तिरस्कार और मरण का सत्कार करते हो। इसलिए मैं मरकर बोल रहा हूँ।"***

   यह पंक्तियाँ हरिशंकर परसाई द्वारा लिखी व्यंग्य कहानी मैं नरक से बोल रहा हूँ में से है। इसमें लेखक ने मनुष्य का अकर्मण्यता और खोखले आदर्श पर खूब व्यंग्य किया है।

   लेखक का कहना है कि मनुष्य जीवित मनुष्य से ज़्याद पत्थर को पूजते है। भूखे को एक वक्त की रोटी नहीं देते वही लोग पत्थर को दूध से अभिषेक करते हैं। जीवित अवस्था में अपने आस पास में रहने वाले की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता और उसके मरने के बाद चिता जलाने केलिए उत्सुह हो उठाता है। इसलिए लेखक को अपनी हालत बताने केलिए मर कर नरक से बोलना पडा।

2. ***"अब मैं कुत्ते ही कृत्ते निर्माण करने का विचार कर रहा हूँ।"***

   इस व्यंग्य कहानी के सबसे महत्वपूर्ण पात्र है 'मैं'। वह कायर, लोभी, अवसरवादी और झूठा है। परसाई जी ने इसमें अपनी सरल, तेज धारदार भाषा के ज़रिए छोटी से छोटी घटना को प्रभाव रुप से व्यक्त किया।

   मरने के बाद लेखक अपने को नरक में और अपने कृत्ते को स्वर्ग में पाते है इसके कारण पूछने पर भगवान गुस्से में कहते है कि भूख के मारे कुत्ता तक दीवार लाँघकर पखवान खाया। मानव होकर बुद्धि और कार्य शक्ति के बावजूद उसने अकर्मण्य रहा। कायर और भीरु मैं के बदले कृत्ता पैदा करना ही अकलमन्दी है। उस कृत्ते में मनुष्यत्व है मानव होकर भी लेखक में कहीं पशुत्व भी नहीं है। उसने तो पाप-पुण्य के झमेले में पड़कर कायर हो गया। कृत्ता ने समझारी,दिखाई मनुष्य होकर भी उसमें मनुष्यत्व नहीं है। उसके जैसे अकर्मण्य कायर भीरु और मूर्ख को नरक ही मिलेगा।

प्रेमचन्दः-

प्रेमचन्द हिन्दी और उर्दु के माहनतम भारतीय लेखकों में से एक है। मूल नाम धनपतराय था। नवाब राय के नाम से भी वे जाने जाते हैं। प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी और उपन्यास की एक ऐसी परंपरा का विकास किया जिसने पूरी सदी के साहित्य का मार्गदर्शन किया। प्रेमचन्द की रचना दृष्टि विभिन्नसाहित्य रूपों में प्रवृत्त हुई। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न प्रेमचन्द ने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, संपादकीय, संस्मरण आदि अनेक विधाओं में साहित्य की सृष्टि की। इन्होंने हंस और जागरण नामक दो पत्रिका भी अपने संपादकत्व में निकाले। उनकी कहानी संग्राह सोजेवतन को उसमें अभिव्यक्त प्रखर राष्ट्रीय भावना के कारण तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया। उनके कुछ प्रमुख रचनायें है- 'सेवासदन', 'गोदान', 'ठाकूर का कुआ', 'बूढी काकी,' 'कर्बला' आदि। उन्होंने हिन्दी कहानी में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की एक नई परंपरा शुरु की।

प्रस्तुत जीवनी स्वामी विवेकानंद प्रेमचन्द के बालोपयोगी साहित्यमाला से ली गयी है। भारत की आध्यात्मिक चेतना-स्वामी विवेकानंद की जीवनी यहाँ प्रस्तुत की गयी है। इसमें विवेकानंदजी के महान चरित्र और दार्शनिक चिन्तन पर प्रकाश डाला गया है।

भारत के नवजाकरण की शंख ध्वनि करने वाले महापूरुपों में उनकी गणना की जाती हैं। उनका जन्म सन् 1863 को कोलकत्ता में हुआ था।बचपन का उनका नाम नरेद्रनाथ था।उनके पिता उच्च न्यायालय में वकील था। उनको भी अँग्रेज़ी पढ़ाकर पाश्चात्य सभ्यता के ढरे पर चलाये। इनकी माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी जी धार्मिक विचारों की महिला थी। नरेन्द्र की बुद्धि बचपन से बडी तीव्र थी और परमात्मा को पाने की लालसा भी प्रबल थे। इस हेतु वे पहले ब्रह्म समाज में गये किन्तु वहों उनके चित्त को सन्तोष नहीं हुआ। सत्य की खोज में वे इधर-उधर भटकने लगे अन्त में श्रीरामकृष्ण परमहंस से उसकी मुलाकात होती है उस सच्चे गुरू से अध्यात्मक तत्व और वेदान्त रहस्य पाकर युवक नरेन्द्रजी की आध्यात्मिक पिपासा शांत हुई। रामकृष्ण परमहंस की महासमाधि के बाद उनके शिष्यों के नेतृत्व का भार नरेन्द्र पर ही आया। वे बंगाल, संयुक्त प्रांत, राजपुताना (राजस्थान) बेबई में भ्रमण किया। जो जिज्ञासु जन श्रद्धावश उनकी सेवा में उपस्थित होते थे उन्हें वे धर्म और नीति के तत्वों का उपदेश देते थे और जिसे विपदग्रस्त देखते उसको सात्वना देते थे।

इस बीच अमरीका के सर्व धर्म सम्मेलन में भाग लेना का निर्णय लिया। संसार के विभिन्न धर्मों ने अपने -अपने प्रतिनिधि भेजे थे और यूरोप के बडे-बडे पादर्शी और धर्मशास्त्र के आचार्य वहाँ मौजूद थे। पहले तो किसी ने भी उनकी ओर ध्यान नहीं दिया पर उन्होंने ऐसी पांडित्यपूर्ण, ओजस्वी और धारा प्रवाह वक्तृता दी कि श्रोता मंडली मंत्र-मुग्ध सी हो गयी।

वे केवल संत ही नहीं थे, एक महान देशभक्त ,वक्ता, विचारक और मानव प्रेमी भी थे। वर्षों तक वह भ्रमण कर भाषण देने लगे थे। बहुत से लोग उनके शिष्य बने। उसमें भगिनी निवेदिता भी शामिल थी जो बाद में रामकृष्ण मिशन के उत्तराधिकारी बनी।

निरन्तर भाषण भ्रमण हेतु स्वामिजी का स्वास्थ बिगड गया 5 जुलाई 1902 को बेलूर में रामकृष्ण मठ में उन्होंने ध्यानग्रस्त अवस्था में महासमाधी धारण कर प्राण त्याग दिए।

प्रश्न और उत्तर

1. विवेकानन्द का बच्चपन का क्या नाम था?

उ. नरेन्द्र नाथ

2. स्वामी विवेकानन्द किसकी रचना है?

उ. प्रेमचन्द्र

3. विवेकानन्द के गुरू का नाम क्या है?

उ. श्रीरामकृष्ण परमहंस

4. रामकृष्ण मिशन की स्थापना किसने की? उसका उद्देश्य क्या था?

उ. रामकृष्ण मिशन की स्थापना मेई 1897 को रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने की। इसका मुख्यालय कोलक्ता के निकट बेलुड में है। रामकृष्ण मिशन दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्म योग मानते है जो कि हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।

MODULE -4

मन्नु भंडारी:-

हिन्दी की सुप्रसिद्ध लेखिका मन्नु भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 मध्य प्रदेश के भानपुर गाँव में हुआ। मन्नु भंडारी हिन्दी की लोकप्रिय कहानीकारों में से है। उन्होंने एक नई रोशनी के तहत महिलाओं को स्वतंत्र और बौद्धिक व्यक्तियों के रूप में चित्रित किया है। यौन, भावनात्मक, मानसिक और आर्थिक शोषण ने हमारे समाज में महिलाओं को बेहद कमज़ोर स्थिति में रखा था। उनकी रचनाओं महिला पात्रों को मजबूत, स्वतंत्र व्यक्तियों के रूप में चित्रित किया गया है। 'मैं हार गई', 'तीन निगाहो की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान', 'बिना दिवारों के घर' आदि उनकी कुछ प्रमुख रचनायें है।

बिना दीवारों के घर

बिना दिवारों के घर मन्नु भेडारी का तीन अकों का नाटक है। इसमें लेखिका ने अजित और शोभा तथा जयन्त और मीना के माध्यम से दांपत्य जीवन को विफल करनेवाली परिस्थितियों का चित्रण किया है।

प्रथम अंक:- प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में अजित के घर का चित्रण किया गया है। अजित का ड्राइंग रूप अस्त व्यस्त सा दिख पडता है। अजित की पत्नी कमरे के अन्दर कुछ गा रही है अजित आवाज देकर उससे हजामत बनाने केलिए ब्लेड माँगता है। अजित और शोभा के बीच तनाव चल रहा है। अजित का शिकायत है कि शोभा आजकल घर को नहीं संभालती है। हाला की घर संभालना औरतों की जिम्मेदारी है। शोभा इस बात को नहीं मानती है उसका कहना है कि गृहस्थी में पति पत्नी दोनों मिलकर जिम्मेदारी निभायें। शोभा गायिका है। साथ ही कालेज अध्यापिका भी। घर पर नौकर नहीं है इसलिए शोभा कालेज और घर संभालने में कहीं कहीं कमी हो जाती है। शादी के शुरुआत के दिनों में शोभा अजित की बहुत ही देखभाल रखती थी पर अब घर का काम और कोलेज देनों के बीच पड़कर अजित की अच्छी तरह देखभाल नहीं कर पाती है। इसी कारण अजित उससे नाराज है। इसी बीच अजित के मित्र जयन्त की पत्नी मीना का आगमन होता है। जयन्त के अपनी आफिस में काम करनेवाली स्टेनो के साथ लगाव के कारण मीना और जयन्त में झगड़ा हो जाता है और दोनों

अलग-अलग रहन लगते है। जयन्त से अलग हो जाने के बाद मीना समाज सेवा का काम करना लगती है। मीना शोभा को अपने एक कार्यक्रम में गाने केलिए बुलाती है पर शोभा मना कर देती है। वहाँ जयन्त का प्रवेश होता है। मीना और जयन्त के बीच की बातों से लगता है कि दोनों के बीच अभी भी संवेदना का भाव है। इसी समय अजित की बाल विधवा बहन जीजी का प्रवेश होता है।

शोभा को गाने केलिए राजी करके मीना और जयन्त चले जाते हैं। तभी अजित वहाँ पहूँचता है। अजित और जयन्त दोनों से जयन्त द्वारा शोभा में ज्यादा दिलचस्पी लेने के कारण अजित को उन दोनों के रिश्ते पर संदेह होने लगता है। मीना फोन करके अजित से शोभा को गाने केलिए मनाने के लिए अनुरोध करती है। अजित मीना की बातों को टाल नहीं सकता था। जयन्त शोभा केलिए एक महिला कोलेज के प्रिंसिपल पद का प्रस्ताव लेकर आता है। शोभा अजित से पूछकर जवाब देने की बात करती है। जयन्त को विश्वास था कि अजित को यह बात स्वीकार नहीं होगा। जयन्त के चले जाने के बाद जीजी और शोभा में जयन्त और मीना के बारे में चर्चा चलती है। जीजी जयन्त को दोषी बताती है पर शोभा मीना को दोषी टहराती है। आगे जीजी कहती है कि अजित शोभा से नाराज है। पर शोभा कहती है कि अजित ने खुद उससे कहा है कि अजित जयन्त को भाई सा बानते है तब फिर उसके बीच क्यों नाराज़गी। अजित जब घर वापस आता है तब शोभा कालेज प्रिंसिपल पद के प्रस्ताव की बात कहती है। अजित को पता चलता है कि यह जयन्त द्वारा आयोजित किया गया है तो उसे गुस्सा आता है और शोभा पर आक्रोश से भरकर उसकी सलाह लेने की बात व्यंग्य में करता है। शोभा ने तो यह पद स्वीकार करने की निर्णय सुना देती है। इस प्रकार अजित और शोभा की बातों से पता चलता है कि जयन्त को लेकर उनके बीच में एक तनाव है।

इसी अंक के दूसरे दृश्य में शाम के पाँच बजे का समय है। ड्इग रूम खाली पडा है और शोभा भीतर से तैयार होकर आती है। शोभा मीना के कार्यक्रम में जाने केलिए अजित की राह देख रही है पर वह अभी तक ऑफिस से नहीं आया। शोभा अजित पर गुस्सा होती हुई जीजी को बताती है कि अजित उससे नाराज है और इसी कारण जान बूझकर नहीं आया। तभी मीना का फोन आने पर शोभा अकेली ही चली जाती है। अजित के घर आता है। जीजि के पूछने पर वह कहता है कि वह ऑफिस के काम से बाहर गया था इसलिए वह शोभा के गाने के कार्यक्रम के बारे में भूल गया था।

जीजी अजित को समझाते हुए शोभा की भावनाओं का ख्याल रखने को कहती है। अजित जीजि से कहता है कि शोभा जान बुझकर उससे झगडा करती है। अगर उसके मन में शोभा के प्रति त्याग नहीं होता तो दस्वी पास शोभा को वह पढाते नहीं। लेकिन जीजी उसके जवाब में उससे कहती है कि तुमने ही शोभा को पढ़ा-लिखाकर योग्य बनाया पर जब उसका अपना अलग व्यक्तित्व बन चुका है यह बात भी ध्यान देना चाहिए। आगे वे कहती है कि पिताजी ने अजित को पढ़ाया लिखाया और पिता चाहते थे कि अजित ही उसकी दूकान संभाले और उसे उसकी काबिल नहीं समझता। अजित जीजी को इस तर्क को दो पीढियों का झगड़ा मानता है पर जीजी उसे स्पष्ट कहती है कि बनानेवाले और बननेवाले का संघर्ष सदैव रहा है, जो दो पीढ़ियों के बीच भी हो सकता है और एक पीढी के दो व्यक्तियों के बीच भी। उसके बाद जयन्त और मीना की बात पर अजित जयन्त का पक्ष लेते हुए कहता है कि स्टेनो के शादी करके चले जाने के बाद मीना को थोडा नरम पड़ जाना था। पर जीजी मीना का पक्ष लेती है, तब अजित जयन्त का पक्ष लेते हुए कहता है- आदमी चाहे न चाहे औरत तो रो-धोकर सह लेती है। इसी समय अजित के अन्दर चले जाने के बाद जयन्त और सोभा आते है। शोभा के कार्यक्रम के सफल होने की बात कहकर जयन्त शोभा को छोडकर चला है। शोभा अजित के कार्यक्रम में न आने पर नाराज होने लगती है। अजित उस पर आरोप लगाते हुए कहता है कि शोभा जयन्त के साथ आते वक्त प्रसन्न थी पर उसे देखते ही वह उस पर क्रोध करते लगी है। अजित द्वारा जयन्त को लेकर व्यंग्य में बात करने के कारण शोभा गुस्सा हो जाती है। इस प्रकार शोभा और अजित के बीच जयन्त को लेकर तनाव बढ़ता ही जा रहा है, पर शोभा उसे समझने की कोशिश ही नहीं कर रही है।

द्वितीय अंकः- इस अंक के पहले दृश्य में कुछ दिनों का समय व्यतीता हो जाने के बाद का संकेत मिलता है। अजित का ड्रोइंग -रूप का ही दृश्य है। शोभा अब महिला कालेज की प्रिंसिपल बन चुकी है और घर पर कर्ल्क के साथ बाते कर रही है। अजित बाहर से आता है और उसे बाते करते देखकर मन ही मन गुस्सा होने लगता है। क्लर्क के जाने के बाद अजित शोभा से कहता है कि उसे कालेज के काम वही पर करना चाहिए घर आकार नहीं। आगे कहता है कि जब से शोभा ने यह नौकरी स्वीकार की है तब से उसे यही लगता है कि वह घर में नहीं शोभा की ऑफिस में रहता है। अजित के इस आरोप पर शोभ उस पर गुस्से होकर कहने लगता है कि उसने कभी भी उसका ख्याल

नहीं किया और ना ही उसकी भावनाओं को समझा। आगे वह अजित से कहती है कि अब उसे यह भी समझना चाहिए कि इस घर के बाहर उसका कुछ व्यक्तित्व एवं अस्तित्व है।

अजित शोभा की बातें सुनकर विना चाय पिये ही घर से निकल जाता है। अजित के इस व्यवहार के कारण शोभा को बहुत बडा आघात लगता है और इसलिए जयन्त के आने पर वह उसे स्पष्ट कर देती है कि अजित की नाराजगी के कारण अब वह प्रंसिपल का कार्य नहीं करना चाहती है। शोभा की बात सुनकर जयन्त उससे कहता है कि अजित उसका जिगरी मित्र होने पर भी थोडा सा ईर्ष्यालू है। जब जयन्त को अग्रेज़ी कंपनी में नौकरी मिली तब से अजित उससे ईर्ष्या करने लगा। जब मीना बी.ए पास होगयी तो अजित ने शोभा का एम.ए. करवाया, इस प्रकार अजित की बाते सुनकर वह नौकरी छोडने की बात न करें ऐसा समझाकर चला जाता है। इसी समय जीजी आकर शोभा को समझाते हुए कहती है कि अजित वास्तव में उससे बहुत प्यार करता है पर वह उसपर एकाधिकार चाहता है। आगे कहती है कि शोभा ने बाहरी ज़िम्मेदारियों का बढ़ा लिया है इसलिए अजित को लगता है कि वह उससे दूर होती जा रही है और वह नारज़ है। पर शोभा का तर्क है कि शादी के शुरुआत के दिनों में पति-पत्नी में लगाव बहुत रहता है पर जैसे जैसे समय बितता चला जाता है सब नशा उतरने लगता है और जब औरत माँ बनती है तब उसके प्यार का केन्द्र बच्चे बन जाते हैं। पति-पत्नी की यह दूरी बढ़ती ही भले हो पर यह अलगाव उनके भीतर के संबन्धों को और दृढ बनाता है। जीजी शोभा को सुझाव देते हुए स्पष्ट कह देती है कि पति-पत्नी के बीच किसी तीसरे व्यक्ति का आना भले वह कितने निकट क्यों न हो किसी, गलतफहमी को जन्म दे सकता है। इसलिए जयन्त को अपने मामलों से दूर रखना ही उचित है।

द्वितीय अंक के दूसरे दृश्य में हमें पता चलता है कि अजित ने बर्मा शैल में नौकरी करने के इरार्द से अपनी नौकरी से त्याग पत्र दे दिया है, पर बर्माशैल का मैनेजर विल्यिम् किसी और को लेना चाहता है। शोभा अजित से जयन्त के द्वारा विलियम् से सिफारिश करवाने को कहती है। पर यह बात अजित को मंज़ूर नहीं था। अजित का बताय बिना शोभा जयन्त से अजित केलिए शिवारिश करवाती है। अजित की कटुवाइट से जयन्त को बहुत दुःख होता है। जयन्त को मालूम है कि दो साल से अजित

का व्यवहार उसके प्रति नॉर्मल नहीं है। ऐसा होने पर भी अजित की बातों का वह बुरा नहीं मानता, क्योंकि उसकी बीमारी के दिनों में और मीना के अलगाव के समय उसने जयन्त का साथ दिया था।

तीसरे दृश्य में अजित के तैयार होकर बाहर जाने के बाद शोभा जयन्त से फोन पर बाते करते हुए अजित के साथ कल उसके झगड़े होने की बात केलिए क्षमा मांगती है। वह कहती है कि अजित के साथ इतने दिनों तक रहने के बाद भी वह उसे समझ न सका और उसे जयन्त के रिशते को लेकर शक है। वह अब घर छोडने के बारे में सोच रही है पर अजित के नौकरी न मिलने के कारण वह ऐसा नहीं का या रही है। जब मीना वहों आ जाती है तो शोभा सारी बातें बता देती है। मीना कहती है कि वह अपने पुराने घर को आज तक भूल नहीं सकी है। किन्तु वहाँ उसे जो अपमान और मानसिक यातनाऐं मिली उससे मजबूर होकर वह यह निर्णाय लेना पडा। अब वह उन यातनाओं को निराश्रित औरतों की सेवा के कारण भूल तर्का है, पर जब वे औरतें कोई आधार मिलने पर वापस चली जाती है तो एक बार फिर से उसके मन अकेला हो जाता है। मीना शोभा और अजित के संबन्ध के बारें पूछने पर शोभा बताती है कि अजित को अपने दोस्त और पत्नी पर विश्वास नहीं है। मीना तो जयन्त को इसकेलिए दोषी ढहराती है पर शोभा यह बात मानने को तैयार नहीं है क्योंकि जयन्त ही अजित के नौकरी केलिए प्रयत्न कर रहा है। इस प्रकार शोभा और मीना के बात तथा अजित के रवैया से पता चलता है कि शोभा और अजित एक दूसरे से काफी दूर चले गये है।

तृतीय अंकः- इस अंक के पहले दृश्य में कुछ महीने बाद का अजित को ड्रांइंग रूप का दृश्य है। अजित का यह ड्रांइंग रूप पहले से अच्छी हालत में सजाया हुआ है। आज शोभा के प्रिंसिपल की नौकरी पक्की होने के खुशी में छोटी से पार्टी का आयोजन हो रहा है। अजित और शोभा के संबन्ध बनी अलगाव के कारण जयन्त उस पार्टी मे आना उचित नहीं समझा पर जीजी के बुलने पर वह आता है। शोभा ने जीजी को इस बात केलिए मना करती है लेकिन जीजी कहती है कि अजित पहले बेकार था इसलिए उल्टी-सीधी बाते करता था। अब जो उसे नौकरी मिली है तो कुछ नहीं करेगा। उस पार्टी में आपे लागों की बातें सुनकर अजित को गुस्ता आता है। वे लेग शोभा के चरित्र को कलंग करने की कोशिश करते है। जयन्त के आने पर वातावरण और भी कटुतापूर्ण हो जाता है। अन्त में शोभा को बताना पडता है कि जयन्त की सिफारिश के कारण ही अजित को नौकरी मिली। शोभा तो

कब का घर छोडने का फैला ली थी पर अजित के बेकरी के कारण इतने दिन इस घर पर रुकी थी। इतना सब होते पर अब शोभा घर छोडने का पैला करली।

दूसरे दृश्य में अजित अपने कमरे मे टहल रहा है। जीजी अजित को समझती है कि अजित को बुलाने पर ही शोभा घर वापस आयेगी पर अजित इसकेलिए तैयार नहीं था। शोभा और अजित के बेटी अप्पी की हालत खराब हो रहा था वह ममी केलिए रो रही है। जीजी के फोन करके बुलाने पर शोभा अप्पी को देखने आती है। जीजी अजित को बार-बार समझाती है कि अब वह शोभा को मना ले और दोनों एक दूसरे से सुलह कर ले पर अजित उसकी बात नहीं मानता।

तीसरे दृश्य मे शोभा डांकटर से अप्पी की तबियत के बारे में पूछती है। अप्पी अब एकदम ठीक हो चुकी है। इसी बीच जीजी और अजित का वार्तालाप से पता चलता है कि शोभा के आये चार दिन हो जाने के बाद भी अजित ने उससे बात तक नहीं की उधर शोभा ने भी अजित से कोई बात करता नहीं चाही। शोभा अजित से अप्पी को अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव कहती है पर अजित तैयार नहीं है। अजित की बातें सुनकर शोभा अपने को अपमानित समझाती है और वह अपने पत्नीत्व के साथ मातृत्व का भी बलिदान करने को तैयार हो जाती है। अजित के कहने पर वह घर से निकल जाती है।

अजित का चरित्र चित्रण

प्रस्तुत नाटक का प्रमुख पात्र अजित है और उसको ही केन्द्र में रखकर नाटक की कथावस्तु को आकार प्रदान किया गया है।

अजित स्वभाव से ईर्ष्यालू है। अजित और शोभा पति-पत्नी है। अजित वर्तमान युग के पढ़े-लिखे युवक का प्रतिनिधित्व करते हुए भी सन्देहशील और थोडा ईर्ष्यालू किस्मका है। आज के युग में हर व्यक्ति अपनी परिस्थिति से संतुष्ट नहीं वह हमेशा ही आगे बढ़ना चाहता है, परन्तु उसकी यह कामना तब ज्यादा हो जाती जब उसके आस पास का कोई व्यक्ति अपनी कम योग्यता में उससे आगे बढ़ जाता है। अजित ऐसा ही व्यक्ति है। अजित और जयन्त दोनों मित्र थे, काफी गहरा रिश्ता था उनके बीच भाई से ज्यादा मानते पर जब किसी बात की समानता की बात होती या जयन्त उससे ज्याता तरक्की करने लगता है तो उसके मन में ईर्ष्या का भाव अवश्य ही जागृत हो जाता है। अजित

की पत्नी शोभा की तुलना में जयन्त बी.ए. पास नीना से शादी हो गई तो अजित ने अपनी पत्नी शोभा को एम.ए तक पढ़ाता है। अजित जहाँ पर नौकरी करता था वहाँ वह अपने काम से संतुष्ट था पर जब जयन्त को विदेशी कंपनी में नौकरी मिल गई तो अजित केलिए यह भी ईर्ष्या का कारण बन जाती है। वह विदेशी कंपनी में नौकरी केलिए लालयित होता है। अजित का मानना है कि घर संभालना और बेटी की परवरिश करना सिर्फ औरत का काम है। शोभा जब प्रिंसिपल बन गया है। तब से घर की काम काज़ में वह असफल है। उसे तो यह नौकरी जयन्त के शिफारिश में मिला था यह बाते जानकर अजित और गुस्सा हो जाता है। मीना के मनाने पर वह शोभा को गाने की इज़ाजत तो देते है पर अन्तर से इस बात केलिए वह खुश नहीं था। बहन जीजी के समझाने के बाद भी कोई समझौता करते केलिए अजित तैयार नहीं था।

अजित प्रस्तुत नाटक में मनोविकार से पीडित सन्देहशील व्यक्ति के रूप में उभरकर सामने आता है। जयन्त अजित का जिगरी दोस्त है। मीना और जयन्त के बीच में जो अलगाव होने पर अजित ने ही उसे संभाला था। पर जयन्त का घर पर बार-बार आना और शोभा साथ किसी भी बात में ज्यादा दिलचस्मी लेना के कारण अजित के मन में जयन्त और अपनी पत्नी के संबन्ध में संदेह उत्पन्न होने लगता है। जब शोभा को जयन्त के सिफारिश पर महिला कालेज में प्रिंसिपल पद मिलता है तो उसका सन्देह और भी बढ़ जाता है। अजित आधुनिक होने पर भी नारी के प्रति एक रुढिवादी दृष्टिकोण रखता था। अपने परिवार को बिखरे ने से रोक सकता था पर अपनी अंहपूरण व्यक्तित्व के कारण अजित अपना खुशी से बरा-पूरा अपना परिवार खो देता है।

शोभा का चरित्र चित्रणः-

प्रस्तुत नाटक ‘बिना दिवारों के घर’ का प्रमुख स्त्री पात्र है शोभा जो अजित की पत्नी है। शोभा आधुनिक नारी रूप चित्रित किया है जो आत्मसम्मान एवं व्यक्ति स्वतंत्रता चाहती है। शोभा और अजित की शादी हुई तब वह दसवीं कक्षा पास थी अजय के कहने पर वह एम.ए. तक पढ़ी। कालेज में काम करती है साथ ही गायिका भी है। शादी के शुरूआत में उनके जीवन बिना किसी दुविधा के चल रहा था पर शोभा की नौकरी उसकी उन्नति पर अजित ईर्ष्यालू बनता गया। शोभा हर बात केलिए

अजित के दोस्त जयन्त से सलाह लेती है और अजित के विरोध के बावजूद महिला विद्यालय के प्रिंसिपल का पद स्वीकार किया। अपनी मेहनत और लगन के कारण उसकी नौकरी पक्की हुई।

शोभा एक आदर्श संस्कारी नारी है। उस पर पति अजित संदेह करता है उसे बार-बार अपमानित करता है। तब वह घर छोडने का निर्णय लेती है पर यह सोचकर अपना फैला बदलती है कि अजित को अब नौकरी नहीं है। जब अजित ने उसका बार-बार अपमान करना चाहा तो उसने अजित के सामने नहीं झुकी, बल्कि अलग रहना बहतर समझा। अपनी बेटी की तबीदत खराब होने पर वह दौड चली आती है। शोभा अपनी पति के प्रति वफादार, बच्ची के प्रति ममातापूर्ण व्यवहार तो करती है। पर आत्म सम्मान को छोड पहूँचने पर किसी के भी आगे झुकने नहीं चाहती। शोभा हमारे सामने अबला नहीं सबला होकर खडी है। आज पुरुष की तरह नारी भी हर क्षेत्र में नौकरिया प्रप्त करने लगी और अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं सत्ता बनाने लगी है।

लेखिका ने प्रस्तुत नाटक में पति-पत्नी के अंह के कारण दूरनेवाले परिवारों का चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत किया है। वास्तव में यह समस्या अजित-शोभा और जयन्त मीना की नहीं पर हमारे पूरे भारतीय समाज की है। हमारे समाज का पुरुष मानसिक व्यक्ति पत्नी को सिर्फ घर की चार दिवारों के बीच में ही देखना चाहता है वह उसके सत्ता को व्यक्तित्व को स्वीकार करने को तायार नहीं है।

****